गलती को न दोहराएं : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 20 सितज़्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आदमी गलती का पुतला है। मोह कर्म का योग होने पर वह गुस्सा हो जाता है। लोभ से पराभूत हो जाता है। दूसरों को कष्ट दे देता है। गलती होना, कोई आश्चर्य नहीं है। पर गलती को दोहराते चले जाना मूढ़ता का लक्षण है, गलतियों से छुटकारा पाना है तो उसका पुनरावर्तन न करें।

उक्त विचार उन्होंने तेरापंथ ज़वन में बौद्ध ग्रंथ धज़्मकार और जैनागम उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक प्रवचन करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि मनुष्य को दु:ख का भय सबसे ज्यादा सताता है। दु:ख को पैदा करने वाला वह स्वयं होता है उसके द्वारा पूर्व में किये गये पाप कर्म दु:ख का कारण बनते हैं। उन्होंने कहा कि दु:ख से बचने के लिए धर्म की आराधना करनी चाहिए। इस मौके पर आचार्यश्री महाश्रमण ने तेरापंथ के सप्तम (सातवें) आचार्य डालगणी के निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका मालव ज्योति का विमोचन किया। यह स्मारिका श्री मालवा जैन श्वेताज़्बर तेरापंथी सभा द्वारा प्रस्तुत की गई है। इसके प्रबंध सज़्पादक ईश्वरचन्द पटेल एवं विनोद पीपाड़ा ने अपने विचार रखे एवं उज्जैन में सरकार द्वारा आचार्य डालगणी मार्ग नामकरण करने की जानकारी दी। मध्यप्रदेश के पेटलावद तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने आचार्य महाश्रमण की एक तस्वीर भेंट करते हुए गीत के द्वारा अपनी भावना अभिव्यक्त की। बीकानेर के प्रेमसुख मरोठी ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

आज आयोजित होगा आचार्य भिक्षु चरमोत्सव

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का 260वां चरमोत्सव आज तेरापंथ भवन में प्रात: 9 बजे आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित किया जायेगा। इस मौके पर आचार्य भिक्षु के आयामों पर, जीवन दर्शन पर एवं उनके संघर्षों की कहानी को अनेक वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत की जायेगी।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)